दलित लेखन में स्त्री चेतना की दस्तक

संकलन-सम्पादन

शिवरानी प्रभात पुहाल

Scanned with CamScanner

ISBN:978-93-82641-27-8

© संपादक

प्रकाशक
अक्षरशिल्पी
10295, गली नं. 1 वैस्ट गोरख पार्क
दिल्ली-110032

एकमात्र वितरक
शिल्पायन
10295, लेन नं. 1, वैस्ट गोरखपार्क,
शाहदरा, दिल्ली-110032

संस्करण : 2017

मूल्य : 795.00
आवरण : उमेश शर्मा

शब्दांकन : उमेश लेज़र प्रिंट्स

मुद्रक : रुचिका प्रिंटर्स, दिल्ली-32

Scanned with CamScanner

अम्बेडकरवादी विचारधारा का प्रचार करती कहानियाँ

● डॉ. विकास कुमार

दलित लेखन के अंतर्गत अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे साहित्यकारों में डॉ. सुशीला टाकभौरे अपना विशेष स्थान रखती हैं। उनका तीसरा कहानी संग्रह 'संघर्ष' हमारे समक्ष है। कुल ग्यारह कहानियों से सुशोभित यह संग्रह दलित साहित्य के विकास का एक नया पड़ाव माना जा सकता है। विवेच्य संग्रह अम्बेडकरवादी विचारधारा से ओत प्रोत होने के साथ, कई भ्रमित करने वाली बातों का सच स्पष्ट करता दृष्टिगोचर होता है। लेखिका के अनुसार दलित समाज की विभिन्न जातियों की दशा में शताब्दियों की लम्बी यात्रा के पश्चात्, वर्तमान में परिवर्तन का जो उद्घोष सुनाई दे रहा है, वह अम्बेडकरवादी विचारधारा का ही सुपरिणाम है। संग्रह की विभिन्न कहानियाँ इस परिवर्तन की सुगबुगाहट को अपने कलेवर में छिपाए, हमारे लिए क्या संदेश देती हैं, इसकी जानकारी हेतु हमें इनमें से गुजरना पड़ेगा। अर्थात इन पर गहराई से दृष्टिपात करना अनिवार्य है।

संग्रह की पहली कहानी, जिसके नाम पर ही कहानी संग्रह का नामकरण हुआ है 'संघर्ष' इस कहानी में शंकर नामक भंगी जाति के लड़के के क्रिया कलापों को आधार बनाकर दलित समाज में आ रही जाग्रती, विशेषतः शिक्षा संबंधी जाग्रती को चित्रित किया गया है। आत्मसम्मान से लबरेज शंकर अपनी नानी का वर्षों पुराना गंदगी उठाने का धन्धा छुड़वा देता है। जिस संबंध में उसकी नानी कहती है कि, "आज से मैंने सब छोड़ दिया... अब मैं सुअर कभी नहीं पालूंगी...। अब मैं गांव बस्ती का काम नहीं करूंगी...। मैंने सब छोड़ दिया आज से...। मैं कसम खा रही हूँ, मैं शंकर की सौगन्ध खाकर कह रही हूँ... बेटा, आज से मैंने सब छोड़ दिया..."[1]

वहीं शंकर अपनी शिक्षा की राह में अवरोधक बन रहे उच्चवर्गीय समाज व उनकी नीतियों के समक्ष एक चुनौती बनकर खड़ा हो जाता है। परिणामस्वरूप अंत में वह अपने लिए शिक्षा का मार्ग खुला पाकर, स्वयं को इस संघर्ष में विजेता पाता है। इसी तरह सहपाठी लड़कों से झगड़ना, उन्हें थूक चटवाना व स्कूल से निकाले जाने

Scanned with CamScanner

परिवर्तन की सुगबुगाहट का संदेश : 'रंग और व्यंग्य'

● डॉ. विकास कुमार

कथाकार, कवि, वैचारिक लेखक के रूप में डॉ. सुशीला टाकभौरे का नाम परिचय का मोहताज नहीं है। 'दलित साहित्य' में अपनी विशेष जगह अर्जित कर चुकीं लेखिका ने अब तक कहानी, कविता व वैचारिक लेखन के माध्यम से ही इस ओर अपना कार्य किया। परन्तु अब वह नाटक विधा के माध्यम से भी अपनी कलम को सुदृढ़ करने का प्रयास कर रही है। इसी प्रयत्न के परिणामस्वरूप उनका नाटक संग्रह 'रंग और व्यंग्य' हमारे समक्ष है। प्रस्तुत नाटक संग्रह में चार नाटक व एक एकांकी को सम्मिलित किया गया है, जोकि 1986 से लेकर 2000 तक, चौदह वर्ष के विशाल फलक में सिमटे हुए हैं। इन पर विभिन्न स्थितियों व आंदोलनों का प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। इन पर अम्बेडकरवादी चिंतन की छाप भी स्पष्ट दृष्टव्य होती है।

'रंग और व्यंग्य' नाटक संग्रह में संकलित प्रथम नाटक 'रंग और व्यंग्य' तीन अंकों व कई दृश्यों तक फैला हुआ है। अंक एक के पहले दृश्य में दलित समाज की स्वाभिमानी नारी के व्यवहार व बदल चुके सामाजिक नियमों को चरितार्थ किया गया है। पटेल के बेटे की शादी में छब्बो अछूता खाना मांगती है, जिसे न मिलता देख वह पटेल से अपने स्वाभिमान हेतु उससे मिली जूठन को उसी के द्वार पर पटक देती है। छब्बो के अनुसार टोकरे में जो जूठन है, वह उसके जानवरों के लिए ली है तथा अपने बच्चों के लिए उसे अछूता खाना चाहिए। इस दौरान पटेल उसे अपने लठैत व पहलवान के माध्यम से डराने का प्रयत्न भी करता है। परन्तु निर्भय होकर छब्बो वहाँ डटी रहती है, जिससे परिवर्तन की आहट की झलक दृष्टव्य होती है। यह परिवर्तन की आहट तब और भी तेज हो जाती है, जब दृश्य के अंत में पटेल, लठैत व पहलवान के साथ जूठन तथा अछूता खाना लेकर छब्बो के घर जाता है। हांलाकि इसमें भी पटेल की स्वार्थ भावना छिपी है।

दृश्य दो में छब्बो की माँ छउआ अपने मोहल्ले में मंदिर का निर्माण करवाती है तथा मूर्ति स्थापना हेतु कार्य करती है। इसी संदर्भ को लेकर पंडित रामसनेही,

Scanned with CamScanner

भारतीय सामाजिक विषमता को दर्शाता 'नंगा सत्य'

● डॉ. विकास कुमार

विश्व की समूची भाषाओं में महिलाओं को नाटककार के रूप में प्रायः कम ही देखा अथवा पाया गया। हिन्दी भाषा भी इससे अपवाद नहीं रखती। वहीं जब बात दलित साहित्य की आती है, तो यह कहना अनिवार्य बन पड़ता है कि इसके अंतर्गत अभी तक नाटकों की संख्या कोई ज्यादा नहीं है। परन्तु इस बात को नकारा नहीं जा सकता, इस ओर प्रयास हो रहे हैं। डॉ. सुशीला टाकभौरे ने भी इस प्रयास में अपना योगदान देकर, यह सिद्ध कर दिया है कि निःसंदेह दलित साहित्य में भी महिला नाटककारों का अनुपात पहले से कम नहीं होगा, बेशक ज्यादा हो जाए। कथा, कविता, वैचारिक लेखन में अपना महत्वपूर्ण योगदान देने के कारण चर्चित सुशीला टाकभौरे ने नाट्य विधा में अपनी कृति लाकर इस योगदान को निरंतरता प्रदान की है। इस विधा को अपनाने की बात स्वीकारते हुए, इसके पीछे छिपे कारणों को उजागर करते हुए वह कहती हैं—"मैं जानती हूँ, नाट्य विधा उद्देश्य परक महत्वपूर्ण विधा है। नाटक विधा अपने समय या कालखण्ड का साक्षात्कार कराते हैं। नाटक में जीवन की समस्याओं को घटनाओं के रूप में रंगमंच पर उपस्थित किया जाता है। दृश्य श्राव्य नाट्य विधा साहित्य की अन्य विधाओं की अपेक्षा त्वरित प्रभावकारी है।"[1]

चार परिदृश्यों के अंतराल में फैला नाटक, 'नंगा सत्य' (प्रमुख संस्करण) प्रमुख व गौण पात्रों की संख्या का कुल जोड़ 30 से ऊपर ले जाता है, परन्तु दृश्य हेतु दो से चार पात्रों से काम चल जाता है। प्रथम परिदृश्य नाटक के आरम्भ होने व उसके समापन सम्बन्धी विचार चर्चा के साथ साथ नाटक के लेखक व सूत्रधार को दर्शाता है। इससे यह भी ज्ञात होता है कि नाटक के पात्र नाटक खेलने व देखने की बात के लिए तैयार हो चुके हैं। विचार चर्चा में गांधी तथा अम्बेडकर की विचारधाराओं की तुलना की गई है।

परिदृश्य दो में ठाकुर धर्मसिंह द्वारा अपना उत्तराधिकारी अपने बेटे सत्यजीत को घोषित किया जाता है तथा सांकेतिक रूप में किसानों, मजदूरों, सफाईकर्मी चप्पल

Scanned with CamScanner

अनुक्रम

पृष्ठ

1. डॉ. सुशीला टाकभौरे : व्यक्तित्व एवं कृतित्व
- शिवरानी प्रभात पुहाल 11
2. डॉ. सुशीला टाकभौरे का साहित्यिक सफरनामा
- जयप्रकाश वाल्मीकि 19
3. सुशीला टाकभौरे की साहित्यिक दृष्टि
- डॉ. सुमित्रा महरोल 28
4. दलित लेखन में स्त्री चेतना की दस्तक - कँवल भारती 34
5. दलित साहित्य में 'संघर्ष' की कहानियाँ
और 'सिलिया' के नाम पत्र - जयप्रकाश वाल्मीकि 39
6. 'संघर्ष' बनाम सामाजिक चेतना - डॉ. अरुण घोगरे 46
7. 'संघर्ष' : एक समीक्षा - डॉ. बालासाहेब सोनवणे 49
8. परंपरागत अमानवीय जड़ता से संघर्ष का शंखनाद–'संघर्ष'
- बल्लभ यमुनेश्वरी 52
9. 'संघर्ष' : अम्बेडकरवादी आन्दोलन की मशाल
- अनिता भारती 54
10. दलित जीवन का यथार्थ उकेरती 'संघर्ष' की कहानियाँ
- कृष्णकुमार भारतीय 58
11. दलितों का सम्बल 'संघर्ष' - डॉ. दिलीप कुमार कसबे 60
12. 'अनुभूति के घेरे' की अभिव्यक्ति - डॉ. संजय गडपायले 66
13. 'अनुभूति के घेरे' बनाम अनुभूति की बेड़ियाँ - डॉ. सुनीता साखरे 70
14. मन की गहराई की सहज अभिव्यक्ति : 'अनुभूति के घेरे'
- डॉ. महादेवी कणवी 75
15. विशिष्टानुभूतियों के मोतियों का संकलन
–'अनुभूति के घेरे' - बल्लभ यमुनेश्वरी 79

Scanned with CamScanner

16. दलित चेतना एवं जागृति को ध्वनित करती कहानियों
का संग्रह 'टूटता वहम' - बल्लभ यमुनेश्वरी 81
17. 'टूटता वहम' : जाति प्रश्न के विमर्श को
गति देती कहानियाँ - डॉ. ऊषा ज. मकवाणा 83
18. डॉ. सुशीला टाकभौरे की कहानियों में दलित समस्याएँ
- सन्तोष कोळेकर 90
19. अम्बेडकरवादी विचारधारा का प्रचार करती कहानियाँ
- डॉ. विकास कुमार 95
20. डॉ. सुशीला टाकभौरे का उपन्यास–'नीला आकाश'
- कैलाशचन्द चौहान 100
21. 'नीला आकाश' : एक अवलोकन और 'नीलिमा के नाम पत्र'
- जयप्रकाश वाल्मीकि 105
22. नीलिमा के नाम पत्र : नीलिमा! तुम्हें और भी आगे जाना है
- जयप्रकाश वाल्मीकि 108
22. दलितों को आशाओं एवं एकता का उपन्यास :
'नीला आकाश' - डॉ. धीरजभाई वणकर 113
23. 'नीला आकाश' में अभिव्यक्त दलित संवेदना
- डॉ. मारग्रेट बी. जी. 119
24. 'नीला आकाश' : इंसानियत की मुक्ति यात्रा
- डॉ. प्रमोद कोवप्रत 125
25 'तुम्हें बदलना ही होगा' उपन्यास–'जातिवाद के गढ़ को
फतह करने के लिए अंतरजातीय विवाह जरूरी है'
- डॉ. रमेशचन्द मीणा 139
26. 'तुम्हें बदलना ही होगा'–'अन्तरजातीय विवाह से ही
सामाजिक विषमता खत्म होगी' - प्रियंका सोनकर 136
27. हिन्दी दलित कथा साहित्य और 'तुम्हें बदलना ही होगा'
उपन्यास की आलोचना - डा. सुरेश मारुतिराव मुळे 148
28. 'शिकंजे का दर्द' में अभिव्यक्त दलित नारी शोषण
- डॉ. शिवगंगा च. रंजणगि 156
29. दलित साहित्य के संदर्भ में 'शिकंजे का दर्द' का अनुशीलन
- माधवी वाघमारे 159
30. शिकंजे के दर्द को समझना ही होगा - डॉ. रमेशचन्द 172
31. 'रंग और व्यंग्य' - सामाजिक विषमता के प्रति विद्रोह है
- डॉ. जी. व्ही. रत्नाकर 183

Scanned with CamScanner

32. 'रंग और व्यंग्य' में सामाजिक चेतना - डॉ. सतीश पावडे 193
33. परिवर्तन की सुगबुगाहट का संदेश : 'रंग और व्यंग्य'
- डॉ. विकास कुमार 196
34. 'नंगा सत्य' : विश्लेषण एवं निष्कर्ष - डॉ. सतीश पावड़े 205
35. इक्कीसवीं शती में 'नंगा सत्य' - डॉ. दिलीप कुमार कसबे 214
36. भारतीय सामाजिक विषमता को दर्शाता 'नंगा सत्य'
- डॉ. विकास कुमार 218
37. विषमताओं के प्रति प्रतिरोध का स्वर : 'नंगा सत्य'
- डॉ. श्रीधर हेगडे 223
38. मानवीय शील संवेदना के सत्य-सुमन, वेणी में गूंथते हुए
डॉ. सुशीला टाकभौरे की कविताएँ - डॉ. पुरुषोत्तम सत्यप्रेमी 228
39. दिशा और दशा का निदर्शन कराती कविताएं!
- कृष्ण 'शलभ' 240
40. 'यह तुम भी जानो' में दलित चेतना - सुनील सांगले 244
41. 'तुमने उसे कब पहचाना' में स्त्री चेतना - सुनील सांगले 245
42. 'तुमने उसे कब पहचाना' में नारी अस्मिता एवं अस्तित्व
की तलाश - डॉ. संजय गडपायले 247
43. 'हमारे हिस्से का सूरज' में सामाजिक चेतना
- आचार्य रमैयाराम 252
44. दलित चेतना एवं सामाजिक परिवर्तन का आधार -
'हमारे हिस्से का सूरज' - बल्लभ यमुनेश्वरी 254
45. सुशीला टाकभौरे की कविता में औरत - प्रियंका शाह 259
46. हाशिए का समाज और सुशीला टाकभौरे की कविताएँ
- प्रियंका सोनकर 263
47. हिन्दी दलितवादी कविता का प्रतिनिधि स्वर :
डॉ. सुशीला टाकभौरे - डॉ. दण्डिभोट्ला नागेश्वर राव 274
48. सुशीला टाकभौरे के काव्य में उत्तर आधुनिकता
- डॉ. भरत सगरे 280
49. दलित कवयित्री की कविता : प्रवृत्तिगत मूल्यांकन
- प्रो. अर्जुन चव्हाण 289
50. दलित स्त्री विमर्श और डॉ. सुशीला टाकभौरे की कविताएँ
- डॉ. राजेन्द्र बड़गूजर 301
51. 'हिन्दी साहित्य के इतिहास में नारी' : एक नजर
- सुनील सांगले 322

Scanned with CamScanner